

अल्लाह ताअला की पनाह

ज़बूर 91

जो लोग अल्लाह रब्बुल अज़ीम की हिफ़ाज़त में रहते हैं,

तो वो लोग उसकी सल्लतनत में सुकून से हैं।⁽¹⁾

मैं अल्लाह से कहूँगा, “तू मेरी सलामती और पनाह की जगह है।

तू ही मेरा रब है, और मैं तुझ पर ही भरोसा करता हूँ।”⁽²⁾

अल्लाह रब्बुल करीम तुम्हें छुपी हुई चालों से और

जानलेवा बीमारियों से महफूज़ रखेगा।⁽³⁾

वो तुम्हारी हिफ़ाज़त एक चिड़िया की तरह करेगा जो अपने पर

फैलाकर अपने बच्चों की हिफ़ाज़त करती है।

उसका कलाम तुम्हारी ढाल के जैसा है।⁽⁴⁾

तुम रातों के खतरों से और

दिन में तीर के हमलों से नहीं डरोगे।⁽⁵⁾

तुम उस बिमारियों से नहीं डरोगे जो अंधेरे में आती हैं।

या उस मर्ज़ से जो दिन में हमला करता है।⁽⁶⁾

तुम्हारी तरफ़ से एक हज़ार लोग मर जायें,

या दस हज़ार लोग तुम्हारे बराबर में ही क्यूँ ना मरें

लेकिन तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा।⁽⁷⁾

तुम सिर्फ़ देखोगे की क्या हो रहा है।

तुम गुनहगारों को सज़ा मिलते देखोगे।⁽⁸⁾

अल्लाह ही तुम्हारी हिफ़ाज़त करने वाला है।

तुम अल्लाह रब्बुल अज़ीम को अपनी सलामती की जगह बना चुके हो।⁽⁹⁾

ना कोई बुरी चीज़ तुम्हारे ऊपर आएगी।

और न कोई मुसीबत तुम्हारे घर की तरफ़ जाएगी।⁽¹⁰⁾

वो अपने फ़रिश्ते तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए भेजता है।

तुम जहाँ भी जाते हो, वो तुम्हारी देखभाल करते हैं।⁽¹¹⁾

इससे पहले तुम्हारे पैर पत्थर से टकराएँ।

वो तुमको अपने हाथों से संभाल लेंगे।⁽¹²⁾

तुम ताक़तवर शेरों और ज़हरीले साँपों को अपने पैरों से कुचलोगे।

तुम इन शेरों और ज़हरीले साँपों पर चलोगे।⁽¹³⁾

अल्लाह ताअला का इरशाद है, “अगर कोई मुझसे प्यार करता है, तो मैं उसे बचा लूँगा।

जो मुझे जानते हैं उन्हें महफूज़ रखूँगा।⁽¹⁴⁾

“वो मुझे पुकारेंगे, और मैं उन्हें जवाब दूँगा मैं मुसीबत में उनके साथ रहूँगा।

मैं उन्हें बचाऊँगा और इज़्जत बख़्शूँगा।⁽¹⁵⁾

“मैं उन्हें लम्बी उम्र अता करूँगा।

मैं उन्हें निजात का रास्ता दिखाऊँगा।”⁽¹⁶⁾